प्रातः क्लास 27/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। यहाँ बैठे2 एक तो तुम बाप को याद करते हो; क्योंकि वह पतित–पावन है। उनको याद करने से ही पावन बन सतोप्रधान बनने की तुम्हारी एम है। ऐसे नहीं सतो तक एम है। नहीं। सतोप्रधान बनने का है। इसलिए बाप को भी जरूर याद करना है। फिर स्वीटहोम को भी याद करना है, क्योंकि वहाँ जाना है। फिर माल–मिलकीयत भी तो चाहिए इसलिए अपने स्वर्ग सुखधाम को भी याद करना है; क्योंकि यह प्राप्ति होने का है। बच्चे जानते हैं हम बाप के बच्चे बने हैं। बरोबर बाप से शिक्षा ले कर हम स्वर्ग में जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाकी जो भी जीव की आत्माएँ हैं वह शान्तिधाम में चली जावेंगी। फिर नम्बरवार आवेंगी। घर तो जरूर जाना है। बच्चों को यह याद रखना है। पवित्र भी जरूर बनना है। अपवित्र वहाँ कोई जा न सके। रावण राज्य तो यहाँ होता है ना। बच्चों को यह भी मालूम हुआ अभी है रावण राज्य। इसके भेंट में सतयुग को फिर नाम दिया जाता है रामराज्य। इसमें फिर दो कला कम हो जाती है। तो उनको कहा जाता है सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी। जैसे क्रिश्चियन की एक ही डिनायस्टी चलती है, वैसे यह भी एक ही डिनायस्टी है; परन्तु उसमें सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी है। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं। जिसको ज्ञान अथवा नालेज कहा जाता है। स्वर्ग स्थापन हो गया फिर नालेज की क्या दरकार। यह नालेज बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग पर सिखाई जाती है। तुम्हारे सेन्टर्स अथवा म्युजियम आदि में यह जरूर बड़े2 अक्षरों में लिखा हुआ हो कि बहनों भाइयों यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग एक ही बार आता है। पुरुषो0 संगमयुग का भी अर्थ नहीं समझते हैं। तो यह भी लिखना है कलियुग अन्त और सतयुग के आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ। तो संगमयुग का भी अर्थ समझना है। वैश्यालय का अन्त, शिवालय के आदि। इनको कहा जाता है संगम। यहाँ सभी हैं विकारी, वहाँ सभी हैं निर्विकारी। तो जरूर निर्विकारी को उत्तम कहेंगे। पुरुष और स्त्री दोनों ही उत्तम बनते हैं। इसलिए नाम ही है पुरुषोत्तम। दोनों उत्तम बनते हैं। इन बातों को बाप के सिवाय और किसको भी पता नहीं है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। किसकी ख्याल में भी नहीं आता कि पुरुषोत्तम संगमयुग कब होता है। अभी बाप आये हुए हैं। वह है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। उनकी ही इतनी महिमा है। वह ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, पतित–पावन है। ज्ञान से ही सभी की सद्गति करते हैं। ऐसे तुम कह नहीं सकेंगे कि भक्ति से सद्गति। सद्गति तो ज्ञान से होती है और होती भी है सतयुग में। तो जरूर कहेंगे कलियुग अन्त और सतयुग के आदि के संगम पर आवेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। नये2 भी आते हैं। हूबहू जैसे कल्प2 आये हैं आते रहते हैं। राजधानी ऐसे ही स्थापन होनी है। तुम बच्चों को मालूम है हम खुदाई खिजमतगार हैं। खुदा खिजमत करने आते हैं। बच्चों को जब खिजमत की दरकार पड़ती है तब बुलाते हैं। तो तुम भी खुदाई खिजमतगार सच्चे2 ठहरे। एक को थोड़े ही पढ़ावेंगे। एक पढ़ाते हैं फिर उन द्वारा तुम पढ़कर औरों को पढ़ाते हो। इसलिए यहाँ भारत में ही यह ईश्वरीय युनिवर्सिटी खोलनी पड़ती है। सारी दुनिया में और कोई ईश्वरीय युनिवर्सिटी है नहीं। न कोई दुनिया में जानता ही है कि कोई ईश्वरीय युनिवर्सिटी होती है। अभी तुम बच्चे जानते हो गीता का भगवान शिव आकर यह युनिवर्सिटी खोलते हैं। नई दुनिया का मालिक देवी देवता बनाते हैं। इस समय तुम जो तमोप्रधान बन गये हो तो फिर तुमको ही सतोप्रधान बनना है। अभी तो तमोप्रधान है ना। भल कई कुमार भी रहते हैं, कुमारियाँ भी पवित्र होती हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं; परन्तु आजकल वह पवित्रता नहीं है। पहले2 जब आत्माएँ आती हैं तो वह पवित्र रहती हैं। फिर अपवित्र बन जाती हैं। सन्यासी भी पहले बहुत अच्छे पवित्र थे। अभी वह भी नहीं हैं; क्योंकि तुम जानते हो सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में सभी को पास होना होता है। अन्त में सभी तमोप्रधान बन जाते हैं। अभी बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। यह झाड़ तमोप्रधान जड़–जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। पुराना हो गया है तो जरूर इनका विनाश

होना चाहिए। यह है वैरायटी धर्मों का झाड़। इसलिए कहते हैं विराट लीला। बड़ा बेहद का झाड़ है। वह तो जड़ झाड़ होते हैं। जो बीज डालो वह झाड़ निकलता है। यह फिर वैराइटी धर्म, वैराइटी चित्र। हैं सभी मनुष्य; परन्तु उनमें वैराइटी बहुत हैं। इसलिए विराट लीला कहा जाता है। सभी धर्म कैसे नम्बरवार आते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो। नम्बरवार ही सबको जाना है। फिर आना है। यह ड्रामा बना हुआ है। है भी कुदरती ड्रामा। कुदरती यह एक है। इतनी छोटी सी आत्मा अथवा परमआत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है। परम आत्मा को मिलाकर परमात्मा कहा जाता है। तुम उनको कहते हो बाबा; क्योंकि सभी आत्माओं का सुप्रीम बाप है ना। बच्चे जानते हैं आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। मनुष्य नहीं जानते। वह तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है वास्तव में यह अक्षर रांग है। यह भी बड़े–2 अक्षरों में लिख देना चाहिए आत्मा निर्लेप नहीं है। आत्मा ही जैसे कर्म करती है अच्छा वा बुरा वैसे2 वह फल पाती है। बुरे संस्कारों से पतित बन जाते हैं। तब तो देवताओं के आगे जाकर उनकी महिमा करते हैं। अभी तुमको 84 जन्मों का पता पड़ गया है। और कोई भी मनुष्य नहीं जानते। तुम 84 जन्म सिद्ध कर बतलाते हो तो कहते हैं शास्त्र सब झूठे हैं; क्योंकि सुना है मनुष्य 84 लाख योनियाँ लेती हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं। वास्तव में सर्वशास्त्र मई शिरोमणि है ही गीता। बाप अभी तुमको राजयोग सिखला रहे हैं। जो 5000 वर्ष पहले सिखाया था। तुम जानते हो हम पवित्र थे। पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी इनको आश्रम नहीं कहेंगे। अधर्मा बन पड़े हैं। धर्म से अधर्म में आ जाते अर्थात् विकारी बनते हैं। इस खेल को तुम बच्चे ही समझ गये हो। यह बेहद का ड्रामा है। जो हर 5000 वर्ष बाद रिपीट होता रहता है। लाखों वर्ष की बात तो कोई समझ भी न सके। यह तो जैसे कि कल की बात है। तुम शिवालय में थे। आज वैश्यालय में हो फिर कल शिवालय में होंगे। सतयुग को कहा जाता है शिवालय। त्रेता को सेमी शिवालय कहा जाता। इतने वर्ष वहाँ रहेंगे। पुनर्जन्म में तो आना ही है। इनको कहा जाता है राम–राज्य। वहाँ विकार का नाम नहीं। इसलिए नंगन होने की बात ही नहीं। बाप एक ही बार आकर नंगन होने से बचाते हैं। फिर आधा कल्प तुम कब नंगन नहीं होंगे। बच्चों ने बुलाया ही इसलिए है कि बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। तो अभी तुमको 21 जन्मों लिए बचाते हैं। नाटक में दिखाते हैं ना द्रौपदी को साड़ियाँ मिलती हैं। नंगन होने से बचा लिया। साड़ी की तो बात ही नहीं। बाप तुमको 21 जन्म नंगन होने से बचा देते हैं। तुम आधा कल्प पतित होंगे ही नहीं। गृहस्थियों को नंगन होने से बचाते हैं। कन्याएँ तो नंगन होती ही नहीं। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। कुमार और कुमारियाँ तो हैं ही पवित्र। उन्हों को फिर समझाया जाता है ऐसे गृहस्थ में जाना ही न है जो फिर पवित्र होने की पुरुषार्थ करना पड़े। भगवानुवाच है कि पावन बनो तो बेहद के बाप का मानना चाहिए ना। तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रह सकते हो फिर बच्चों में नंगन होने की आदत क्यों डालते हो जब कि बाप 21 जन्मों के लिए नंगन होने से बचाते हैं। यह लोक–लाज कुल की मर्यादा भी छोड़नी पड़े। यह है बेहद की बात। बैचलर तो सभी धर्मों में बहुत रहते हैं; परन्तु सेफ्टी में रहना जरा मुश्किल हो जाता है। फिर भी रावणराज्य में रहते हैं ना। विलायत में भी ऐसे बहुत मनुष्य शादी नहीं करते हैं। फिर पिछाड़ी में कर लेते हैं कम्पेनियनशिप के लिए। क्रिमनल आई से नहीं ऐसे भी दुनिया में बहुत होते हैं। पूरी सम्भाल करते हैं तो उनको देकर जाते हैं जबकि वह मरने पर होते हैं। कुछ धर्माऊ लगा देते। ट्रस्टी बना देते हैं। विलायत में भी बड़े2 ट्रस्टी होते हैं जो फिर यहाँ भी मदद करते हैं। यहाँ ऐसा ट्रस्टी नहीं होगा जो विलायत को भी मदद करे। यह तो गरीब लोग हैं यह क्या मदद देंगे। वहाँ तो उन्हों के पास पैसे बहुत हैं। भारत तो गरीब है ना। कहा जाता है, ''आपे पीने घोड़ा गिने'' (खुद भिखारी और घोड़ा खरीद करना) खुद भीख मांगते रहते और घोड़ा खरीद करते रहते कर्जा लेकर। भारत की बात है। एक तरफ खुद मदद लेते रहते और फिर यहाँ से मदद करते रहते। जबकि खुद ही ले रहे हैं। तो दूसरे राजाई क(ी)

मदद दे कैसे सकते। इस पर एक पहाका(कहावत) है। नाम करने के लिए दूसरे को मदद करते रहते हैं। मनुष्य कर्जा लेते हैं लज्जा शर्म थोड़े ही रहता है। कर्ज तो मर्ज कहा जाता है। भारतवासियों का क्या हालते हैं। भारत कितना सिरताज था। कल की बात है। खुद भी कहते हैं 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। बाप ही बनाते हैं ना। तुम जानते हो बाप कैसे ऊपर से नीचे आते हैं पतितों को पावन बनाने। वह है ही ज्ञान का सागर, पतित–पावन। सर्व की सद्गति दाता अर्थात् सभी को पावन बनाने वाला। तुम बच्चे जानते हो मेरी महिमा तो सभी गाते हैं। मैं यहाँ पतित दुनिया में ही आता हूँ। तुमको पावन बनाने। तुम पावन बन जाते हो तो फिर पहले2 पावन दुनिया में आते हो। बहुत सुख उठाते हो। फिर रावण राज्य में गिरते हो। भल गाते तो हैं परमात्मा ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर पतित–पावन है; परन्तु पावन बनाने लिए कब आवेंगे यह कोई भी नहीं जानते। बाप कहते हैं तुम मेरी महिमा करते हो ना। अभी मैं आया हूँ। तुमको अपना परिचय दे रहा हूँ। मैं हर 5000 वर्ष बाद इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। कैसे आता हूँ वह भी समझाता हूँ। चित्र भी हैं। ब्रह्मा कोई सूक्ष्मवतन में नहीं होता है। ब्रह्मा यहाँ है। ब्राह्मण भी यहाँ ही हैं। ब्रह्मा को ही ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। जिसका फिर सिजरा चलता है। मनुष्य सृष्टि का सिजरा तो प्रजापिता ब्रह्मा से चलेगा ना। प्रजापिता है तो जरूर अनेक प्रजा होगी। कुखवंशावली तो हो न सके। जरूर एडॉप्टेड होंगे। ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर है तो जरूर एडाप्ट किया होगा ना। तुम सभी एडाप्टेड बच्चे हो। अभी तुम ब्राह्मण बने हो फिर तुमको देवता बनना है। शूद्रों से ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवता.....यह बाजोली का खेल है। विराटरूप का भी चित्र है ना। वहाँ से सबको यहाँ आना है। जब सब आ जाते हैं तो फिर क्रियटर भी आते हैं। वह क्रियेटर, डायरैक्टर है। एक्ट भी करते हैं। बाप कहते हैं हे आत्माएँ तुम मुझे जानते हो। तुम आत्माएँ मेरे सब बच्चे हो ना। तुमने पहले सतयुग में शरीर धारण कर कितना अच्छा पार्ट बजाया। फिर 84 जन्मों बाद तुम कितने दुख में आ गये हो। ड्रामा का क्रियेटर, डाइरेक्टर, डियुरेशन भी होती है। यह है बेहद का ड्रामा। बेहद के ड्रामा को कोई भी नहीं जानते। भक्तिमार्ग में ऐसी2 बातें सुनाई है जो मनुष्यों की बुद्धि में वही ठूस गया है। कितने बड़े2 गपोड़े हैं। इसलिए बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों यह सभी भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। भक्तिमार्ग की सामग्री इतनी है जितनी बीज और झाड़ की है। इतनी छोटी बीज़ में कितना बड़ा झाड़ पैदा होता है। भक्ति का भी प्रस्ताव इतना है। ज्ञान तो बीज है। उसमें कोई सामग्री आदि की दरकार नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करो। और कोई पर्त नेम नहीं। यह सभी बन्द हो जाना है। तुमको सद्गति मिल जावेगी फिर कोई भी बात की दरकार ही नहीं। तुमने ही भक्ति बहुत की है। उसका फल तुमको देने लिए आया हूँ। भक्ति से वैश्यालय में गिरने की ही दुर्गति हुई है। देवताएँ तो शिवालय में थे ना। तब तो मंदिरों में जाकर उनकी महिमा गाते हैं। अभी बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों में ने 5000 वर्ष पहले भी तुमको समझाया था कि अपन को आत्मा समझो। देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। मुझे एक बाप को याद करो तो इस योग–अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। बाप जो अभी समझाते हैं कल्प कल्प समझाते आये हैं। गीता में भी कोई2 अक्षर होते हैं। मन्मनाभव। अर्थात् मुझे याद करो। शिवबाबा कहते हैं मैं यहाँ आया हूँ। किसके तन में आता हूँ वह भी बताता हूँ। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदो–शास्त्रों का सार तुमको सुनाते हैं। चित्र भी दिखाते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। अभी तुम समझते हो शिवबाबा कैसे ब्रह्मा द्वारा सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं। 84 जन्मों का, ड्रामा का राज़ भी तुमको समझाते हैं। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में मैं आता हूँ। यह ही फिर पहले नम्बर का प्रिन्स बनते हैं। फिर 84 जन्मों में आते हैं। यही शिवालय में थे। फिर वैश्यालय में आये हैं। सभी बातें क्लीयर कर समझाई जाती हैं। ऐसी बात नहीं है जो तुम नहीं समझते हो। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग में कितना फर्क है। ज्ञान का सागर एक बाप को ही कहा जाता है। गाया भी जाता है सर्व का सद्गति दाता। वह कब आवेगा यह किसको

भी पता नहीं है; क्योंकि कल्प की आयु ही बहुत लम्बी कर दी है। इसलिए भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान गिरते ही आये हैं। अभी बाप सहज समझानी देते हैं। कुछ भी खर्चा नहीं। बिगर कौड़ी खर्चे हीरे जैसा बन सकते हो। तुमको थोड़ा खर्चा करना भी पड़ता है वही फिर हीरे बन जाते हैं। बाकी तो सभी खत्म हो जाना ही है। बाप हर बात अच्छी रीत समझाते हैं। यह तो स्त्री और पुरुष हाफ पार्टनर दिखाते हैं। वह भी तुम वहाँ दोनों सुखी रहते हो। यहाँ तो हाफ पार्टनर है नहीं। पूरा हाफ पार्टनर तब कहा जाये जब बच्चा न हो। अगर बच्चे हैं। तो उन्हों के भी लागत लगती है। स्त्री से भी पहले तो बच्चों का लगता है। तो फिर वह हाफ पार्टनर कैसे हो सकती। 5/6 बच्चे हैं तो उनकी भी लागत लगती है। हाफ पार्टनर है; परन्तु फिर वारस जो होते हैं उनका भी हिस्सा लगता है। देना पड़ता है। सभी का अपना2 हिस्सा रहता है। इसलिए जब विल करते हैं तो कोई लड़े झगड़ें नहीं इसलिए सही कर देते हैं। नहीं तो बहुत झगड़े हो पड़ते हैं। एक/दो को मार डालते हैं। कलियुग है ना। कायदे भी हैं ना। बाप से राय लेकर करो। जबकि बच्चे बने हो तो हर हालत में श्रीमत लेते रहो बाबा इस हालत में क्या करें? दोनों में ज्ञान है तो दोनों का इकट्ठा सफल होता है। दोनों ज्ञान में हैं फिर कोई रोला न होना चाहिए। बड़ा ही प्यार से चलना है। दैवीगुण तो यहाँ धारण करनी है ना। क्रोध होता है तो उनको भी अवगुण अथवा आसुरी गुण कहा जाता है। तुम तो ब्राह्मण हो ना। अगर दैवीगुण धारण न करेंगे तो फिर देवता बन न सकेंगे। बाप बैठ तुमको इस समय देवता बनने लायक बनाते हैं। बच्चों को हर बात में श्रीमत देते रहते हैं। स्त्री–पुरुष का भी आपस में कोई झगड़ा न होना चाहिए जब कि ज्ञान में हैं तो। पति ज्ञान में न है फिर अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। नंगन करते हैं। इसलिए दिखाते हैं कृष्ण भगवान ने द्रौपदी को साड़ियाँ दी थी। वास्तव में है ..... ज्ञान की बातें। कृष्ण साड़ियाँ कैसे देंगे। बा..... समझाते हैं तुम अभी पवित्र बनने से फिर 21 जन्मों लिए कब नंगन नहीं होंगे। तो बाप मीठे2 ..... बैठ समझाते हैं। बाप की ही महिमा है। गाते हैं ना हे शिवबाबा तेरे भाने सर्व का भला। सर्व का सदगति वाला बाप ही है। बाप ही स्वर्ग की रचना रचते हैं। शिवरात्रि मनाते हैं ना। कृष्ण की भी रात्रि मनाते हैं; परन्तु वह तो पुनर्जन्म लेते हैं। शिव तो पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। इसमें ही रोला पड़ गया है। कृष्ण की रात्रि को तो समझते हैं कि रात्रि को जन्म लिया। शिव ने फिर कैसे जन्म लिया यह कोई भी समझते नहीं हैं। गीता में है मैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में इनमें प्रवेश करता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। 84 का हिसाब भी बैठ तुमको समझाते हैं। मुख्य2 तो बातें हैं समझाने की वह बड़े2 अक्षरों में लिखकर रख दो जो दूर से भी देख सकें। पाण्डवों के चित्र देखो कितने बड़े2 बनाते हैं। इतने बड़े तो मनुष्य होते ही नहीं। मनुष्य को पूंछ वा इतनी भूजाएँ आदि होते ही नहीं। यह सभी है भक्तिमार्ग। अन्धश्रद्धा से सभी कुछ करते रहते हैं। देवियों की पूजा पर कितना खर्चा होता होगा। आगे तो लाखों रुपया खर्च करते थे। बनाया, पूजा कर खिलाया–पिलाया फिर डुबो दिया। इसलिए कहा जाता है अन्धे के औलाद अंधे। कुछ भी समझते नहीं है। आत्मा की बुद्धि एकदम लॉक हो जाती है। इसलिए कहा जाता है पत्थर बुद्धि। देवताएँ हैं पारस बुद्धि। अभी तुमको कितना सहज रीति समझाया जाता है। यह है अपवित्र दुनिया। वह है पवित्र दुनिया। फिर भी बन्दरबुद्धि बिल्कुल समझते ही नहीं। सूरत मनुष्य की सीरत बन्दर की है। सतयुग में सीरत देवताओं की होती है। यहाँ तो हैं बन्दर मिसल। बाप आकर बन्दरों की सेना ले सबको छुड़ाते हैं। ज्ञान देकर रावण से छड़ा देते हैं। बाकी बन्दरों आदि की कोई बात नहीं। अभी तुम बाप के बच्चे भी नॉलेजफुल बनते हो। सभी को नॉलेजफुल नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती रहती है। बहुत हो जावेंगे तो बहुत सुनेंगे। अखबारों द्वारा ही सुनकर घृणा करते हैं। अभी एक–एक से बैठ कौन माथा मारे जो बात बुद्धि से निकले। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। बच्चों को नमस्ते अर्थ सहित।